

सतत विकास लक्ष्य 17 और नागरिक समृद्धि: एक समीक्षा

सोनम सैन^{1*}, डॉ. शैलेंद्र मोर्य²

1 रिसर्च स्कॉलर (राजनीति विज्ञान), डॉ. के.एन. मोदी यूनिवर्सिटी, नेवाई, टोंक, राजस्थान, भारत

Sainkrishankant221@gmail.com

2 एसोसिएट प्रोफेसर (राजनीति विज्ञान), सामाजिक अध्ययन संकाय, डॉ. के. एन. मोदी यूनिवर्सिटी, नेवाई, टोंक, राजस्थान, भारत

सार: सतत विकास वैश्विक स्तर पर एक प्रमुख प्राथमिकता बन गया है, जो आर्थिक विकास, सामाजिक समानता और पर्यावरण संरक्षण को एकीकृत करता है। संयुक्त राष्ट्र के **2030 एजेंडा** के अंतर्गत 17 सतत विकास लक्ष्य (SDGs) निर्धारित किए गए, जिनका उद्देश्य देशों को समार्वशी और संतुलित विकास की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करना है। इन लक्ष्यों में **SDG-17** विशेष रूप से साझेदारी, सहयोग और संस्थागत समन्वय पर जोर देता है, जो अन्य सभी लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रमुख प्रेरक तत्व माने जाते हैं। यह समीक्षा शोधपत्र सतत विकास की अवधारणात्मक नींव का विश्लेषण करता है और SDG-17 के संदर्भ में राजनीतिक प्रणालियों, शासन संरचनाओं और नागरिक समृद्धि के बीच संबंधों का अध्ययन करता है। अध्ययन यह दर्शाता है कि प्रभावी शासन, पारदर्शिता, जवाबदेही और सहभागी राजनीतिक प्रणालियाँ समानतापूर्ण विकास तथा नागरिकों के जीवन स्तर में सुधार लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इसके साथ ही, यह शोध राजनीतिक संकेतकों—जैसे विकेंद्रीकरण, संस्थागत क्षमता, नीतिगत समन्वय और जनभागीदारी—की भूमिका पर भी चर्चा करता है, जो सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति की गति को तेज करने में सहायक होते हैं। अध्ययन के निष्कर्ष यह रेखांकित करते हैं कि नागरिक समृद्धि केवल आर्थिक उपलब्धि नहीं है, बल्कि यह समार्वशी शासन, संस्थागत ईमानदारी और समन्वित नीतिगत क्रियान्वयन का परिणाम भी है। इसलिए दीर्घकालिक सतत विकास और वैश्विक प्रगति सुनिश्चित करने के लिए साझेदारियों और शासन तंत्र को सुदृढ़ बनाना अत्यंत आवश्यक है।

मुख्य शब्द : ईमानदारी, सतत विकास, **SDG-17**, नीतिगत समन्वय, राजनीति

1. परिचय

सतत विकास पर्यावरण संरक्षण पर केंद्रित है, साथ ही वर्तमान और भावी पीढ़ियों के लिए आर्थिक और सामाजिक विकास और कल्याण प्रदान करता है। सतत विकास की तीन परस्पर संबंधित अवधारणाएँ, या मुख्य तीन स्तंभ हैं: सामाजिक स्थिरता, आर्थिक स्थिरता और पर्यावरणीय स्थिरता। इन पंक्तियों में, चित्र 1 इन अंतर्संबंधों को दर्शाता है। उत्तरदायी और सतत विकास प्राप्त करने के लिए, प्रत्येक कार्य या निर्णय में प्राकृतिक, मानवीय और आर्थिक पूँजी, सभी को ध्यान में रखा जाना चाहिए। [1]



चित्र 1.1: सतत विकास के तीन स्तंभ

साहित्य में, स्थिरता के और भी पहलुओं को अक्सर अतिरिक्त स्तंभों के रूप में मान्यता दी जाती है, जैसे संस्थागत आयाम, सांस्कृतिक आयाम और तकनीकी आयाम। इसके बावजूद, स्थिरता को परिभाषित करते समय ये तीन स्तंभ सबसे आम और व्यापक रूप से प्रयुक्त दृष्टिकोण हैं।

आर्थिक स्थिरता में एक ऐसी अर्थव्यवस्था शामिल है जिसकी उत्पादन प्रणाली उपभोग के स्तरों को पूरा करने में सक्षम हो, जबकि सरकारी और बाह्य ऋण प्रबंधनीय स्तरों पर हों और क्षेत्रीय संतुलन बना रहे, जिससे कृषि और औद्योगिक उत्पादन में होने वाली क्षति को रोका जा सके। सामाजिक स्थिरता मुख्यतः समता पर आधारित है: स्वास्थ्य सेवाओं, शिक्षा, राजनीतिक भागीदारी और लैंगिक समानता तक समान पहुँच। पर्यावरणीय स्थिरता पर्यावरण संरक्षण और प्राकृतिक संसाधनों, पारिस्थितिक तंत्रों और जैव विविधता के संरक्षण पर आधारित है, जो नवीकरणीय संसाधनों पर अधिक निर्भर करती है। सतत विकास के ये मूल सिद्धांत अब दुनिया भर के कई देशों और क्षेत्रों में लागू किए जा रहे हैं। [2]

स्थिरता के सिद्धांतों पर आधारित विश्व को बढ़ावा देने और सफलतापूर्वक बनाने के लिए, सतत विकास के विकास और प्रगति को प्रभावित करने वाले कारकों पर विचार और जाँच करना महत्वपूर्ण है। साहित्य में पहचाने गए कुछ कारक इस प्रकार हैं:

- सतत विकास के बारे में एक स्पष्ट, सार्वभौमिक परिभाषा का अस्तित्व, जो सतत विकास के अर्थ और प्रतिनिधित्व के बारे में गलतफहमियों को रोकेगा।
- सतत विकास की बहु-विषयक प्रकृति।

- सतत विकास के प्रति लोगों और समुदायों का दृष्टिकोण और समर्थन।
- लोगों की ज़रूरतें, विशेष रूप से विकासशील और गरीब देशों के लोगों की।
- प्रौद्योगिकियों और उपकरणों के साथ-साथ उन प्रणालियों और विचारों में प्रगति जो सतत विकास को बढ़ावा देते हैं और उसे सुगम बनाते हैं। [3]

पिछले कुछ दशकों में, स्थिरता की अवधारणा ने दुनिया भर का ध्यान आकर्षित किया है और नीति निर्माताओं, निर्णयकर्ताओं, शिक्षाविदों और विशेषज्ञों द्वारा इस पर व्यापक रूप से चर्चा की गई है। सतत विकास अब हर राजनीतिक एजेंडे का हिस्सा है और दुनिया को सभी के लिए अधिक टिकाऊ बनाने के लिए कई तरह के लक्ष्य और लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं।

यह लेख संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास के लिए 2030 एजेंडा में शामिल 17 सतत विकास लक्ष्यों पर केंद्रित है, जिसे 2015 में अपनाया गया था। हमारे लेख का उद्देश्य इन 17 लक्ष्यों में से प्रत्येक, उनके महत्व और स्थिरता में उनके योगदान की व्यापक जाँच करना और उन प्रमुख संकेतकों के विकास को प्रस्तुत करना है जो इन लक्ष्यों को प्राप्त करने में हुई प्रगति को दर्शाते हैं, एक प्रवृत्ति विश्लेषण के माध्यम से जो हमने किया और प्रत्येक समयावधि में, प्रत्येक क्षेत्र में निकाले गए औसत परिवर्तन के माध्यम से। इसके अलावा, इन औसत परिवर्तनों के साथ-साथ संयुक्त राष्ट्र (2020a) के मूल्यांकन के आधार पर, हम उन क्षेत्रों की पहचान करते हैं जिन पर वैश्विक स्तर पर नीति-निर्माताओं को ध्यान केंद्रित करना चाहिए। [4]

2. राजनीतिक प्रणालियों, शासन और नागरिक समृद्धि के बीच अंतर्संबंध

राजनीतिक व्यवस्थाओं, शासन संरचनाओं और नागरिक समृद्धि के बीच गहरा संबंध है, क्योंकि राजनीतिक संस्थाएँ सामाजिक और आर्थिक विकास की नींव रखती हैं। किसी देश की राजनीतिक व्यवस्था यह निर्धारित करती है कि सत्ता का वितरण कैसे होता है, निर्णय कैसे लिए जाते हैं और सार्वजनिक संसाधनों का प्रबंधन कितनी प्रभावी ढंग से किया जाता है। इस व्यवस्था की व्यावहारिक अभिव्यक्ति के रूप में, शासन, निर्णय लेने, कार्यान्वयन और जवाबदेही की गुणवत्ता को परिभाषित करता है जिसका नागरिकों के कल्याण पर सीधा प्रभाव पड़ता है। प्रभावी शासन यह सुनिश्चित करके समतामूलक विकास को बढ़ावा देता है कि नीतियाँ पारदर्शी, समावेशी और जन आवश्यकताओं के प्रति उत्तरदायी हों। इसके विपरीत, भ्रष्टाचार, सत्ता के केंद्रीकरण और पारदर्शिता की कमी से चिह्नित कमज़ोर शासन असमानता को बनाए रखता है और नागरिकों की आर्थिक एवं सामाजिक प्रगति के अवसरों तक पहुँच को सीमित करता है। [5]

लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं में, नागरिक समृद्धि तब बढ़ती है जब राजनीतिक भागीदारी, कानून का शासन और संस्थागत अखंडता मज़बूत होती है। लोकतंत्र खुले संवाद, नागरिक सहभागिता और जन विश्वास को प्रोत्साहित करते हैं—जो निरंतर समृद्धि के लिए आवश्यक हैं। समावेशिता और विकेंद्रीकरण पर ज़ोर देने वाली राजनीतिक व्यवस्थाएँ नीतिगत परिणामों को प्रभावित करने के लिए विविध आवाज़ों और स्थानीय प्राथमिकताओं के लिए जगह बनाती हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि विकास जनसंख्या की आवश्यकताओं को प्रतिबिंबित करता है। इसके अलावा, शासन तंत्र जो शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और रोज़गार जैसी सेवाओं के कुशल वितरण को सक्षम बनाते हैं, मानव पूंजी विकास और सामाजिक कल्याण में सीधे योगदान करते हैं। [6]

इसके विपरीत, निरंकुश या अस्थिर राजनीतिक व्यवस्थाएँ अक्सर भागीदारी और जवाबदेही को सीमित कर देती हैं, जिससे संसाधनों का अकुशल आवंटन और जनता में असंतोष पैदा होता है। इस प्रकार, नागरिक समृद्धि केवल एक आर्थिक परिणाम नहीं, बल्कि एक राजनीतिक और संस्थागत उपलब्धि है। मज़बूत शासन ढाँचा यह सुनिश्चित करता है कि आर्थिक विकास जीवन की बेहतर गुणवत्ता, समानता और सामाजिक सुरक्षा में परिवर्तित हो। पारदर्शी, सहभागी और जवाबदेह राजनीतिक प्रणालियाँ विश्वास, सहयोग और सतत विकास के लिए अनुकूल वातावरण बनाती हैं। इसलिए, राजनीतिक प्रणालियों और समृद्धि के बीच अंतर्संबंध को समझने से इस बारे में बहुमूल्य अंतर्दृष्टि मिलती है कि कैसे शासन सुधार और संस्थागत सुदृढ़ीकरण सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) को प्राप्त करने के उद्देश्य से नीतियों की प्रभावशीलता को बढ़ा सकते हैं, विशेष रूप से एसडीजी 17, जो शासन के विभिन्न क्षेत्रों और स्तरों में साझेदारी और सहयोग पर ज़ोर देता है।

3. सतत विकास लक्ष्यों की आवश्यकता क्यों है?

लक्ष्य क्यों महत्वपूर्ण हैं? लक्ष्य-आधारित सफलता का तर्क जॉन एफ. कैनेडी से बेहतर किसी ने नहीं दिया, जिन्होंने 50 साल पहले दिया था। जून 1963 में दिए गए आधुनिक अमेरिकी राष्ट्रपति पद के सबसे महान भाषणों में से एक में, कैनेडी ने कहा था: "अपने लक्ष्य को और अधिक स्पष्ट रूप से परिभाषित करके, उसे अधिक प्रबंधनीय और कम दूरस्थ बनाकर, हम सभी लोगों को उसे देखने, उससे आशा प्राप्त करने और उसकी ओर अधिक रूप से बढ़ने में मदद कर सकते हैं।" [7]

लक्ष्य निर्धारित करना कई कारणों से महत्वपूर्ण है। पहला, वे सामाजिक गतिशीलता के लिए आवश्यक हैं। गरीबी से लड़ने या सतत विकास प्राप्त करने में मदद के लिए दुनिया को एक दिशा में उन्मुख होने की आवश्यकता है, लेकिन हमारे शोरगुल, असमान, विभाजित, भीड़भाड़, भीड़भाड़, विचलित और

अक्सर अभिभूत दुनिया में हमारे किसी भी सामान्य उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रयास करना बहुत कठिन है। वैश्विक लक्ष्यों को अपनाने से दुनिया भर के व्यक्तियों, संगठनों और सरकारों को दिशा पर सहमत होने में मदद मिलती है - अनिवार्य रूप से, हमारे भविष्य के लिए क्या मायने रखता है, इस पर ध्यान केंद्रित करने में मदद मिलती है। लक्ष्यों का दूसरा कार्य साथियों का दबाव बनाना है। सहस्राब्दि विकास लक्ष्यों (एमडीजी) को अपनाने के साथ, राजनीतिक नेताओं से सार्वजनिक और निजी तौर पर अत्यधिक गरीबी को समाप्त करने के लिए उठाए जा रहे कदमों पर सवाल उठाए गए। [8]

लक्ष्यों के महत्व का तीसरा तरीका है, ज्ञान-मीमांसा समुदायों - विशेषज्ञता, ज्ञान और व्यवहार के नेटवर्क - को सतत विकास की चुनौतियों के इर्द-गिर्द कार्रवाई के लिए प्रेरित करना। जब साहसिक लक्ष्य निर्धारित किए जाते हैं, तो ज्ञान और व्यवहार के ये समुदाय परिणाम प्राप्त करने के व्यावहारिक रास्ते सुझाने के लिए एक साथ आते हैं।

अंततः, लक्ष्य हितधारक नेटवर्क को गतिशील बनाते हैं। सामुदायिक नेता, राजनेता, सरकारी मंत्रालय, वैज्ञानिक समुदाय, प्रमुख गैर-सरकारी संगठन, धार्मिक समूह, अंतर्राष्ट्रीय संगठन, दाता संगठन और फाउंडेशन सभी एक साझा उद्देश्य के लिए एक साथ आने के लिए प्रेरित होते हैं। सतत विकास की जटिल चुनौतियों से निपटने और गरीबी, भुखमरी और बीमारी के खिलाफ लड़ाई के लिए इस तरह की बहु-हितधारक प्रक्रिया आवश्यक है। केनेडी ने स्वयं शीत युद्ध के चरम पर सोवियत संघ के साथ शांति की अपनी खोज में आधी सदी पहले लक्ष्य निर्धारण के माध्यम से नेतृत्व का प्रदर्शन किया था। वाशिंगटन डीसी स्थित अमेरिकी विश्वविद्यालय में अपने प्रसिद्ध दीक्षांत भाषण से शुरू होकर, केनेडी ने दूरदर्शिता और व्यावहारिक कार्रवाई के संयोजन पर आधारित शांति अभियान की नींव रखी, जिसका मुख्य उद्देश्य परमाणु परीक्षणों को समाप्त करने की संधि पर केंद्रित था। [9]

शांति भाषण के मात्र सात सप्ताह बाद, अमेरिका और सोवियत संघ ने सीमित परमाणु परीक्षण प्रतिबंध संधि पर हस्ताक्षर किए, जो शीत युद्ध के हथियारों की होड़ को धीमा करने के लिए एक ऐतिहासिक समझौता था, जिसकी कल्पना कुछ महीने पहले तक नहीं की जा सकती थी। हालाँकि सीमित परमाणु परीक्षण प्रतिबंध संधि ने शीत युद्ध को समाप्त नहीं किया, लेकिन इसने इस बात का प्रमाण दिया कि बातचीत और समझौता संभव है, और भविष्य के समझौतों की नींव रखी।

4. सतत विकास लक्ष्यों की दिशा में प्रगति पर राजनीतिक संकेतकों का प्रभाव

पारदर्शिता, जवाबदेही, संस्थागत क्षमता, विकेंद्रीकरण, जन भागीदारी और नीति समन्वय जैसे राजनीतिक संकेतक सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) की प्राप्ति के लिए महत्वपूर्ण प्रेरक के रूप में कार्य

करते हैं। ये संकेतक दर्शाते हैं कि एक राजनीतिक और प्रशासनिक प्रणाली किस हद तक प्रभावी निर्णय लेने में सहायक होती है, विश्वास को बढ़ावा देती है और विकास लाभों का समान वितरण सुनिश्चित करती है। उदाहरण के लिए, पारदर्शिता यह सुनिश्चित करती है कि सरकारी निर्णय और वित्तीय आवंटन समीक्षा के दायरे में हों, जिससे भ्रष्टाचार कम हो और सरकारी संस्थाओं में नागरिकों का विश्वास बढ़े। जब नागरिकों को शासन प्रक्रियाओं के बारे में जानकारी दी जाती है, तो वे विकास पहलों में रचनात्मक रूप से शामिल होने की अधिक संभावना रखते हैं, जिससे कार्यान्वयन दक्षता में वृद्धि होती है। [10]

जवाबदेही एक अन्य प्रमुख राजनीतिक संकेतक है, जो यह सुनिश्चित करता है कि सरकारी अधिकारी और संस्थान अपने कार्यों और परिणामों के लिए जवाबदेह हों। प्रभावी जवाबदेही तंत्र—जैसे लेखा परीक्षा, नागरिक चार्टर और स्वतंत्र निगरानी निकाय—सरकारी कार्यों को जनता की अपेक्षाओं के अनुरूप बनाने में मदद करते हैं। संस्थागत क्षमता भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है; सक्षम संस्थानों और कुशल कर्मियों के बिना, अच्छी तरह से डिज़ाइन की गई नीतियाँ भी परिणाम देने में विफल रहती हैं। एसडीजी लक्ष्यों की दिशा में प्रगति की योजना बनाने, निगरानी करने और मूल्यांकन करने के लिए मज़बूत संस्थान आवश्यक हैं। इसी प्रकार, विकेंद्रीकरण स्थानीय शासन और सहभागी नियोजन को बढ़ावा देता है, जिससे निर्णय नागरिकों के अधिक निकट लिए जा सकते हैं और यह सुनिश्चित होता है कि नीतियाँ विशिष्ट क्षेत्रीय या सामुदायिक आवश्यकताओं को पूरा करें।

जनभागीदारी लोकतांत्रिक वैधता को बढ़ाती है और यह सुनिश्चित करती है कि हाशिए पर पड़े समूहों को विकास प्रक्रिया से बाहर न रखा जाए। सहभागी शासन विकास परिणामों के साझा स्वामित्व को बढ़ावा देता है, जो दीर्घकालिक स्थिरता के लिए आवश्यक है। दूसरी ओर, नीति समन्वय यह सुनिश्चित करता है कि सरकारी मंत्रालय, क्षेत्र और प्रशासन के स्तर अलग-अलग काम करने के बजाय एक साथ मिलकर काम करें। सतत विकास लक्ष्य स्वाभाविक रूप से आपस में जुड़े हुए हैं; इसलिए, आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय आयामों में नीतिगत सुसंगतता अत्यंत महत्वपूर्ण है। कमजोर समन्वय प्रयासों के अतिव्यापन और संसाधनों की अकुशलता को जन्म दे सकता है, जिससे प्रगति कमज़ोर हो सकती है।

सामूहिक रूप से, ये राजनीतिक संकेतक यह निर्धारित करते हैं कि कोई राष्ट्र सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए साझेदारी, संसाधनों और जनता के विश्वास को कितनी प्रभावी ढंग से जुटा सकता है। मज़बूत राजनीतिक संकेतकों वाले देश आमतौर पर तेज़ प्रगति प्रदर्शित करते हैं, क्योंकि उनकी शासन प्रणालियाँ सतत विकास लक्ष्यों को राष्ट्रीय नीतियों में एकीकृत करने में सहायक होती हैं और नागरिक-केंद्रित कार्यान्वयन सुनिश्चित करती हैं। इसलिए, इन राजनीतिक आयामों को मज़बूत करना न

केवल एसडीजी 17 की सफलता के लिए बल्कि संपूर्ण सतत विकास एजेंडे की प्राप्ति के लिए भी आवश्यक है। [11]

5. निष्कर्ष

यह समीक्षा दर्शाती है कि सतत विकास एक बहुआयामी अवधारणा है, जिसके लिए आर्थिक स्थिरता, सामाजिक समानता और पर्यावरण संरक्षण का समन्वय आवश्यक है। विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि राजनीतिक प्रणालियाँ और शासन संरचनाएँ नागरिक समृद्धि को आकार देने तथा सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। पारदर्शिता, जवाबदेही, जनभागीदारी और सुदृढ़ संस्थागत ढाँचे से युक्त प्रभावी शासन ऐसा वातावरण तैयार करता है, जहाँ विकास नीतियों को कुशलतापूर्वक और समान रूप से लागू किया जा सकता है। इसके विपरीत, कमजोर शासन, भ्रष्टाचार और समन्वय की कमी विकास प्रयासों को बाधित करती है तथा सामाजिक और आर्थिक असमानताओं को बढ़ाती है। इसके अतिरिक्त, अध्ययन यह दर्शाता है कि **SDG-17**, जो साझेदारी और सहयोग पर केंद्रित है, अन्य सभी सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए आधार का कार्य करता है। सरकारों, संस्थानों, नागरिक समाज और अंतरराष्ट्रीय संगठनों के बीच मजबूत साझेदारियाँ संसाधनों के समुचित उपयोग, ज्ञान के आदान-प्रदान और विकास पहलों के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। विकेंद्रीकरण, नीतिगत समन्वय और संस्थागत क्षमता जैसे राजनीतिक संकेतक सतत विकास पहलों की प्रगति को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं। समग्र रूप से, नागरिक समृद्धि केवल आर्थिक वृद्धि का परिणाम नहीं है, बल्कि यह समावेशी शासन, प्रभावी संस्थानों और सहयोगात्मक विकास ढाँचों से उत्पन्न होती है। इसलिए सतत विकास के व्यापक लक्ष्य को प्राप्त करने तथा विश्वभर के समाजों के कल्याण को बढ़ाने के लिए शासन तंत्र को सुदृढ़ करना और वैश्विक तथा स्थानीय स्तर पर साझेदारियों को प्रोत्साहित करना अत्यंत आवश्यक है।

संदर्भ

1. स्टॉट, एल. (2022) साझेदारी और परिवर्तन: संदर्भ में बहु-हितधारक सहयोग की संभावनाएँ। लंदन: रूटलेज, पृ. 1-212।
2. ब्लिचास्का, एम., टॉयचश्टबाइन, सी., स्मिथर्स, आर. जे. (2021) एसडीजी साझेदारियाँ वैश्विक उत्तर-दक्षिण विभाजन को बनाए रख सकती हैं। *साइंटिफिक रिपोर्ट्स*, 11(1): 22092।

3. मुड्लियार, पी., कूटज़, टी. एम. (2021) ओस्ट्रॉम के डिज़ाइन सिद्धांतों में शक्ति का स्थान: भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका में जलागम प्रबंधन। *सोसाइटी एंड नेचुरल रिसोर्सेज*, 34(5): 639–658।
4. फोन्सेका, एल. एम., डोमिंगुएस, जे. पी., दीमा, ए. एम. (2020) सतत विकास लक्ष्यों के संबंधों का मानचित्रण। *सस्टेनेबिलिटी: साइंस प्रैक्टिस एंड पॉलिसी*, 12(8): 3359।
5. वेस्टरगार्ड, ए., मर्फी, एल., मॉर्सिंग, एम., आदि (2019) क्रॉस-सेक्टर साझेदारियाँ पूंजीवाद के नए विकास एजेंट के रूप में: प्रभाव को सशक्तिकरण के रूप में पुनःपरिकल्पित करना। *बिज़नेस एंड सोसाइटी*: 1–38।
6. अर्थ सिस्टम गवर्नेंस प्रोजेक्ट (2018) अर्थ सिस्टम गवर्नेंस: अर्थ सिस्टम गवर्नेंस प्रोजेक्ट की विज्ञान और कार्यान्वयन योजना। यूट्रेक्ट, नीदरलैंड। उपलब्ध: <https://www.earthsystemgovernance.org/research-framework/> (प्रवेश तिथि: 15 जनवरी 2023)।
7. सिंह-पीटरसन, एल., ईरानाकोलेइवा, एम. (2018) फिजी में आजीविका आधारित किसानों के लिए बाज़ार की बाधाएँ – एक लैंगिक दृष्टिकोण। *जर्नल ऑफ रूरल स्टडीज़*, 60: 11–20।
8. बियरमैन, एफ., काने, एन., किम, आर. ई. (2017) लक्ष्य-निर्धारण के माध्यम से वैश्विक शासन: संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों का नया दृष्टिकोण। *करंट ओपिनियन इन एनवायरनमेंटल सस्टेनेबिलिटी*, 26–27: 26–31।
9. ड्राइज़ेक, जे. एस., पिकरिंग, जे. (2017) विचार-विमर्श एक उत्प्रेरक के रूप में: प्रत्यावर्ती पर्यावरणीय शासन। *इकोलॉजिकल इकोनॉमिक्स: द जर्नल ऑफ द इंटरनेशनल सोसाइटी फॉर इकोलॉजिकल इकोनॉमिक्स*, 131(C): 353–360।
10. किम, आर. ई. (2016) अंतरराष्ट्रीय कानून और सतत विकास लक्ष्यों के बीच संबंध। *रिव्यू ऑफ यूरोपियन, कम्परेटिव एंड इंटरनेशनल एनवायरनमेंटल लॉ*, 25(1): 15–26।
11. बर्नस्टीन, एस. (2005) वैश्विक पर्यावरणीय शासन में वैधता। *जर्नल ऑफ इंटरनेशनल लॉ एंड इंटरनेशनल रिलेशन्स*, 1(1–2): 139–166।